>

Title: Regarding hike in prices of generic drugs by European Union under Intellectual Property Right.

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण): माननीय सभापति महोदय, मैं आपका ध्यान इंडिया और यूरोपियन यूनियन के बीच में मार्च में होने वाले फ्री ट्रेड एग्रीमेंट की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। अगर यह समझौता हो गया तो उसके बाद मैडिसंस एवं एग्नोकेमिकल्स के दाम आसमान छूने लगेंगे और पेटेंट की आड़ में भारतीय फार्मास्युटिकल एवं एग्नोकेमिकल्स कंपनियां बंदी के कगार पर पड़ चुकीं। डब्ल्यूटीओ के तहत सभी देशों को आपस में व्यापार करने की सुविधा है। यूरोपियन यूनियन इसके बाहर इंडिया से एफटीए करना चाहता है। इसके लिए उसने तीन डिमांड्स की हैं। प्रथम इनवैल्यूड आईपीआर चैप्टर इन ट्रेड पैक्ट, दूसरी लिबेराइज्ड पेटेंटिंग स्टैंडर्ड्स और तीसरी डाटा एक्सक्लूसिविटी एंड सप्लीमेंट्री प्रोटेक्शन सर्टिफिकेट। इसमें सबसे अजीब बात यह है कि इन तीनों प्रावधानों के बारे में कॉमर्स मिनिस्ट्री एवं डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रियल पॉलिसी एंड प्रमोशन दोनों इसे ट्रिप्ले प्लस करके बिल्कुल नकार रहे हैं। लेकिन उसके बावजूद भी प्रधान मंत्री जी के आफिस से इसे पास कराने के लिए वे बहुत परेशान हैं। हमारे पास पहले से इंडिया पेटेंट ला 2005 है, जो डब्ल्यूटीओ और ट्रिप्ले कम्प्लिएंट है। इसके बाद भी इन नये प्रावधानों को मानने की बात क्यों हो रही है और क्यों माना जा रहा है। यह हम लोगों की समझ में नहीं आ

16.59 hrs.

(Dr. M. Thambidurai in the Chair)

रहा है। क्योंकि इसके बाद सारी मैडिसंस महंगी हो जाएंगी, एग्नोकेमिकल्स की दवाइयां महंगी हो जाएंगी।

यूरोपियन यूनियन इसके अलावा भी एक चीज चाहता है कि इंडियन कोर्ट्स पेटेंट इनफ्रिजमेंट केसिज में ऑटोमैटिक इनजंक्शन हो। मतलब बिना सुनवाई के इनजंक्शन होनी चाहिए। सबसे बड़ी बात है कि यूरोपियन यूनियन की जो डिमांड है कि रिमूवल और डाइव्यूलन ऑफ दि सैक्शन 3डी ऑफ इंडियन पेटेंट एक्ट, जो कहता है कि अगर एफिकेसी में अगर बहुत ज्यादा फायदा नहीं तो उनका पेटेंट नहीं होगा। परंतु डाटा एक्सक्लूसिविटी की आड़ में बिना पेटेंट के ही सालों-साल यूरोपियन कंपनियां इससे पैसे कमा सकती हैं। यह प्रोविजन करने से हमें भी कुछ फायदा होगा। हमारी कोल्हापुरी चप्पल, नागपुरी संतरे, आगरा का पेठा ये सब पेटेंट के रूप में हो जाएंगे। लेकिन इसके बदले हिन्दुस्तान की सारी दवाइयां महंगी हो जाएंगी। एग्नोकेमिकल्स की सारी मैडिसंस महंगी हो जाएंगी। इस चीज के अपोजीशन अमरीका में वैक्समैन कमेटी ने भी इन प्रावधानों को बदलकर अपने देश का पेरू के साथ समझौता किया है।

कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे देश इन प्रावधानों का यूरोपियन यूनियन के साथ विरोध कर रहे हैं। हम इसका समर्थन करने के लिए क्यों उत्सुक हैं, यह मुझे समझ में नहीं आ रहा है? हमारे यहां सतनाम कमेटी की रिकमंडेशन पर एग्नोकेमिकल्स में तीन साल की डाटा एक्सक्लूसिविटी का रिकमंडेशन किया गया है। जिससे अभी सरकार पांच साल के लिए नया बिल करने जा रही है। अगर डाटा एक्सक्लूसिविटी पांच साल के लिए हो जाएगी तो जितनी भी स्मॉल फॉर्मलेशंस वाली कंपनियां हैं, वे सब खत्म हो जाएंगी और अगर पीएमओ ने इस पर एपूवल दे दिया और यूरोपियन यूनियन ने साइन किया तो हिन्दुस्तान की दवाइयां आज के रेट से पांच गुणा महंगी हो जाएंगी। सॉल्टी और डाटा एक्सक्लूसिविटी के नाम पर सारी यूरोपियन कंपनियां पैसा कमाएंगी और हिन्दुस्तान में आम आदमी को दवाइयां बिल्कुल उपलब्ध नहीं होंगी। धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN : Shri Shivkumar Udasi, Shri Devji M. Patel, Shri Rajendra Agrawal, Shri Arjun Ram Meghwal, Shri Shivraj Bhaiya and Shri Virender Kashyap are also associating on this issue.